

# شریعت میں امام و موزن کا مقام اور ہماری ذمہ داریاں

منصب امامت ایک جلیل القدر منصب ہے جو گویا کہ نبیت رسالت (انبیاء کے نائب) ہیں، جس کی بنیاد پر امام صاحب کا اکرام و احترام لازم ہے۔ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: تمہارے امام تمہارے سفارشی ہیں، یا آپ ﷺ نے یہ فرمایا کہ تمہارے امام اللہ تعالیٰ کے ہیں اسی تمہارے نمائندہ ہیں۔ امتکم شفعاء کم او قال و قد کم الـلـهـ اخـ. (اتحاف الشـادـةـ المـتـقـيـنـ ۳/۱۷۵)

دوسری حدیث میں ہے کہ موزن کو اللہ کے راستہ میں شہید کی طرح ثواب ملتا ہے اور مرنے کے بعد اس کا جسم کیڑوں کی غذائیں بنتا۔ (مجمجم طبرانی، بحولہ المرقاۃ المفاتیح ار ۳۸۸)

حضرت عبد اللہ ابن عمر راوی میں کہ سرور کائنات ﷺ نے فرمایا، جو آدمی بارہ برس تک اذان دے اس کے لیے جنت واجب ہو جاتی ہے اور اس کے اذان کے بدله میں (اس کے نامہ اعمال میں) ہر روز (یعنی ہر اذان کے عوض) سالٹھ نیکماں اور ہر تکبیر کے بدله میں تین نیکماں لکھی جاتی ہیں۔” (سنن ابن ماجہ، مشکوٰۃ شراف: جلد اول: حدیث نمبر ۶۲۲)

امام اور موزن صاحبان کو نوکر سمجھنا یا نوکروں جیسا بر تاؤ ان کے ساتھ کرنا بہت غلط بات ہے اور ان کی حق تلفی ہے۔ یہ خیال تکبر سے پیدا ہوتا ہے۔ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: جس کے دل میں ذرہ رابر تکبر ہو گا جب تک اس کو دوزخ میں جلا کر نکال بند پا جائے گا وہ جنت میں نہیں حاصل کتا۔ (مسلم شریف ۱/۱۴۵)

پیش امام ریاضی علیہ السلام کی عبّت و تو قیمہ کرنی جائے، اس کی لے عبّتی اور تو میں اور ہنگامہ کرنا گناہ سے۔ (کشفیت المفتاح، جلد ۳، صفحہ ۹۲) ★

★ اس لئے جو خصوصیات ایسا کرتے ہیں ان کے لئے ضروری ہے کہ وہ اس سے باز آئیں اور اپنی اصلاح کریں اور آئندہ امام و مؤذن صاحبان کا کرام و احترام کریں۔

★ فقہائے کرام حجہم اللہ نے اس بات کی تصریح کی ہے کہ مسجد کے متولی اور مدرسے کے ہنرمند کو لازم ہے کہ خادمان مساجد اور مدارس کو ان کی حاجت کے مطابق اور ان کی علمی قابلیت اور تقویٰ و صلاح کو ملحوظ رکھتے ہوئے وظیفہ و مشاہرہ (تباہ) دیتے رہیں۔ باوجود گنجائش کے کمر و سنابر کی بات سے اور مستوی کی خدا کے ہمارا جواب دہ ہوں گے۔ (درحقیقت و الشانع، جلد ۳ صفحہ ۳۸۹، جلد ۲ صفحہ ۲۸۷)

★ صوناں امانت کی تحریک، سرکار امام برخلاف ان کی فرم داری اپنے افکار اخلاق سے جھاٹوں، بناءورنالا راصاوون کے نوغم و امن، کی خدمت لدنامی شہر

لعظيم کرو۔ بے شک جس نے ان کی تکریم کی اس نے میری تکریم کی (الجامع الصغیر للام حافظ المیوطی جلد ا، صفحہ ۱۲۵)

# ਹਰੀਅਤ ਮੈਂ ਇਸਾਮ-ਕ-ਸੁਅਨਿਆਨ ਕਾ ਸਕਾਮ ਔਰੈ ਹਮਾਰੀ ਜਿਸ਼ੇਦਾਰਿਆਂ

★ दूसरी हडीस में है कि मुअ़िज़्ज़न को अल्लाह के रास्ते में शहीद का सवाब मिलता है और मरने के बाद उसका जिस्म कीर्दों की गिज़ा नहीं बनता।

(મોઅંજમ તિવરાની, બહુવાલા મિરફાતુ-ઉલ-મફાતીહ, 1/488)

**★** हंजरत मङ्गुल्लाह इब्ने-उमर (राजि.) रावी हैं कि सरवरे-कायनात (सल्ल.) ने फ़रमाया : जो आदमी बारह साल तक अज़ान दे उसके लिए जन्मत वाजिब हो जाती है और उसके अज़ान के बदले में (उसके नामा-ए-आमाल में) हर रोज़ (यानी हर अज़ान के बदले) साठ नेकियाँ, और हर तकबीर के बदले में तीस नेकियाँ लिखी जाती हैं।

(सुनन इब्ने-माजा, मिशकात शरीफ़ 1/हंदीस नं. 642)

★ इमाम और मुअज्जिन साहिबान को नौकर समझना या नौकरों जैसा बरताव उनके साथ करना बहुत ग़लत है और उनकी हक़्-तलफ़ी है। यह ख़्याल तकब्बुर से पैदा होता है। रसूलुल्लाह (सल्ल.) ने फ़रमाया : जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी तकब्बुर होगा जब तक उसको दोज़ख़ में जला कर निकाल न दिया जाएगा वह जन्मत में नहीं जा सकता।

(મુસ્લિમ શરીફ 1/પેજ :165)

**★** पेशे-इमाम की इन्जिनियरिंग करनी चाहिए, उसकी बेइनिंग और तौहीन और हितक करना चाहिए। (किफायतुल-मुफ्ती : 3/पेज : 92)

इस लिए जो हज़रात ऐसा करते हैं उनके लिए ज़रूरी है कि वह इस से बाज़ आएँ और अपनी इसलाह करें और आइंदा इमाम-व-मुअज्जिन साहिबान का इकराम-व-एहतिराम करें।

★ फुफ्हा-ए-फरान राणन्हुम्लाहू न इस बात का पत्तराहू कि है तक नासिर के नुपरियों और नदरस के नाहियान की लाग्नी है तक लालदानी-नसानी और नवारेस की उनकी हाजत के मुताबिक़ और उनकी क़बलियत और तक़्वा-व-सलाह को मलहूज ख्यते हुए वज़ीफ़ा-व-मुशाहिरा (तंख्वाह) देते रहें। बावजूद गुंजाइश के कम देना बुरी बात है और मुतवल्ली खुदा के यहाँ जवाब-देह होंगे। (दुर्रे-मुख्तार, 3, पेज : 389 शामी, 2, पेज : 78)

**★ सिफ़्र इमामत की तस्वीर देकर इमाम पर अज़ान की ज़िम्मेदारी डालना और उनसे झांक देने और नालियाँ साफ़ करने वगैरह उम्र की ख़िदमत लेना जुल्म-शदीद और तौहीन है, नवी करीम (सल्ल.) का फ़रमान है : हामिलीने-कुरआन (हुफ़्फ़ाज़, कुर्रा, उलमा-ए-किराम) की ताज़ीम करो, बेशक जिसने इनकी तकरीम की उसने मेरी तकरीम की।**

(अल-जामितस्सग़ीर लिलूमाम अल-हाफ़िज़ अल-सयूती गिल्द 1, पेज 145)

★ एक और हृदीस में है कि “हामिलीने-फुरआन इस्लाम के अलम्बरदार हैं और इस्लाम का झंडा उठाने-वाले हैं, जिसने उनकी ताज़ीम की उसने अल्लाह की ताज़ीम की और जिसने उनकी तज़्लील की उसपर अल्लाह की लानत है” (फ़तावा रहीमिया जिल्द : 4 पेज :355)